अनुक्रम

		पृष्ठ संख्या
अवतरणिका	—	5-6
सचिव की कलम से	—	7-9
महारावल खुम्माण का ऐतिहासिक महत्व-लेख	—	11-18
प्रस्तावना	—	19-34
कथासार	—	35-43
अनुक्रम	—	45-48

मूल काव्य (संशोधित)

(द्वितीय भाग)

प्रथम खंड

1.	मंगलाचरण —छंद सं.1-13	51-54
2.	काव्य-रचना का महत्त्व—छंद सं.14-16	54
3.	चित्तौड़ दुर्ग वर्णन—छंद सं.1-18	55-58
4.	चित्तौड़ के स्वामी—सूर्यवंशी राजवंश—छंद सं.19-30	59-61
5.	गुहादित्य का गढगाजना में राज्य स्थापन और गुहिलोत वंश की चौबीस शाखाओं का प्राकट्य—छंद सं.31-32	61
6.	यवनों का गढगाजना पर अधिकार, गुहिलोतों का युद्ध में मारा जाना और बीज-बहोड़ नाम शेष—छंद सं.33-35	62
7.	पंजर की रानी का मेवाड़ में आगमन और नागिल ब्राह्मण के घर में आश्रय ग्रहण तथा बापा का जन्म—छंद सं.36-37	62-63
8.	बापा का बाल्य-जीवन, गौचारण, हारीत ऋषि से भेंट और आत्म परिचय देना—छंद सं.38-43	63-64
9.	हारीत ऋषि द्वारा बापा को उपदेश—छंद सं.44-47	64

10.	गौचारण के समय सरोवर की आगोर में सोये हुए बापा को अंबिका का कुमारी वेश में दर्शन और आजीवन सहयोग का वचन—छंद सं.48-54	64-66
11.	अंबिका के द्वारा बापा को शस्त्रास्त्रों का दान —छंद सं.55-58	66-67
12.	हारीत ऋषि के द्वारा बापा को चित्तौड़ के राज्य की प्राप्ति का आशीर्वाद —छंद सं.59-67	67-69
13.	बापा का चित्तौड़ दुर्ग के लिये प्रस्थान और मोरी राजा की चाकरी —छंद सं.68-87	69-72
14.	दुर्दान्त नामक दैत्य से त्रस्त प्रजा की राजा के सम्मुख पुकार और राजा के द्वारा सामन्तों में बीड़ा फिराना—छंद सं.88-99	72-74
15.	बापा द्वारा बीड़ा स्वीकार करना, देवी-देवताओं और सामन्तों की सहायता से दुर्दान्त से युद्ध, दुर्दान्त का वध और उसकी पुत्री से विवाह, तथा दुर्दान्त के पुत्र को द्रोणागिर के सिंहासन पर बैठाना—छंद सं. 100-247	75-83
16.	बापा के द्वारा अपने पूर्वजों की राजधानी गढ़ गाजना पर आक्रमण और बादशाह सलेमशाह का वध, गढगाजना पर अधिकार करके थाने स्थापित करना—छंद सं.248-313	83-115
17.	बापा का चित्रकूट पर आक्रमण, चित्रांगराय मोरी का वध और दुर्ग पर अधिकार, मोरी राजा की 17 राजकुमारियों के साथ विवाह और चित्तौड़ में सिंहासनारूढ होना।—छंद सं.314-442	115-140
18.	पटरानी पद्मावती के आग्रह पर अपनी माता को लिवा लाने हेतु एकलिंगजी के लिये प्रस्थान, माता और नागिल ब्राह्मणी से भेंट, एकलिंगजी के मंदिर का निर्माण, यज्ञयाग सहित ब्राह्मणों को दान, वापी-कूप जलाशयों का निर्माण, नागदा नगर की स्थापना, हारीत राशि से भेंट, गुरु के आसान और मठ की स्थापना, गुरु के आदेश से परिवार सहित राज-प्रासाद में प्रवेश और नागिरकों के द्वारा स्वागत —छंद सं.443-497	140-150
19.	बापा के बारह पुत्रों का जन्म, ज्येष्ठ पुत्र बाला का विद्याभ्यास, विवाह और राज सौंपकर काशीवास, तथा अश्वमेध यज्ञ—छंद सं.498-508	150-152

द्वितीय खण्ड

20.	मंगलाचरण—509-510	153

21. रावत करण एवं राजसभा का वर्णन, रावत करण के द्वारा इन्द्र भवन-निर्माण का वर्णन, चित्तारण द्वारा दिल्ली की तोमर राजकुमारी रतिसुंदरी के अभिग्रह की जानकारी और रतिसुंदरी से विवाह—511-897 153-226

तृतीय खण्ड

22. मंगलाचरण—898-902 227

23. रतिसुंदरी के अभिग्रह पर राजकुमार खुम्माण का व्यंग और रतिसुंदरी का परित्याग—903-919 228-231

24. रतिसुंदरी की सखियों से एवं अपने साथ पीहर से आये लोगों से मंत्रणा और खुम्माण से प्रतिशोध की योजना और रतिसुंदरी के अभिग्रह की पूर्ति—920-1094 231-268

25. खुम्माण का आखेट हेतु प्रस्थान और नलवर नगर आगमन लोहजंग का आवास की व्यवस्था हेतु नलवर नगर के बाहर बने प्रासाद में लाखा से मिलन, खुम्माण से लाखा की भेंट और स्वागत-सत्कार, एवं प्रेम प्रसंग —1095-1134 268-277

26. भीमक सेठ की पुत्रवधु तिलोत्तमा की विरह व्यथा, कामवासना की पूर्ति हेतु लाखां के घर के लिए प्रस्थान, लाखां द्वारा स्वागत—1135-1267 278-310

27. कुमार खुम्माण-तिलोत्तमा मिलन और परस्पर प्रेम पाश में आबद्ध होना, कुमार का चित्तौड़ के लिए प्रस्थान और धींगा गणगोर पर पुनरागमन का आश्वासन—1268-1323 310-323

28. खुम्माण की विरह व्याधि और चिकित्सा के निरर्थक उपाय— छंद सं. 1324-1358 324-329

29. विरहिणी तिलोत्तमा द्वारा शुक के माध्यम से संदेश प्रेषण और खुम्माण का नलवर नगर के लिए प्रस्थान—छंद सं. 1359-1417 330-342

30. तिलोत्तमा द्वारा भीम बगीचे में स्वागतार्थ साजसज्जा, रात भर प्रतीक्षा और निराश होकर घर लौट जाना—छंद सं. 1418-1440 342-346

31. संकेत स्थल पर खुम्माण का आगमन, प्रेमिका की अनुपस्थिति में प्राणत्याग ।—छंद सं. 1441-1454 346-348

32. बागवान द्वारा राजा को सूचना और शिव पूजा का आयोजन —छंद सं. 1455-1487 349-354

33. तिलोत्तमा का शिव मंदिर में आत्महत्या का निश्चय, शिव पार्वती द्वारा प्रदत्त अमृत सेवन से मृत-संजीवन ।—छंद सं. 1488-1505 354-359

34. नलवर नरेश की पुत्री से विवाह, खुम्माण - तिलोत्तमा का एकान्त मिलन और नवरस विलास—छंद सं 1506-1556 — 359-368

चतुर्थ खंड

35. देवी-स्तवन—छंद सं.1557-1568 369-371

36. रति सुंदरी द्वारा संदेश प्रेषण और प्रत्यागमन हेतु निवेदन —छंद सं.1569-1710 371-396

37. खुम्माण का चित्तौड़गढ़ आगमन —छंद सं.1711-1756 396-405

38. धनपति साह का राजा को उपालंभ, एवं रावल करण से खुम्माण की शिकायत और खुम्माण का निर्वासन—छंद सं.1757-1793 406-412

39. सामंतों द्वारा खुम्माण को लौटा लाने की संस्तुति, और खुम्माण को लौट आना—छंद सं.1794-1804 413-415

40. चंपक की गजनी पति बादशाह को शिकायत और बादशाह का चित्तौड़ पर आक्रमण—छंद सं.1805-1833 415-422

41 रावल करण के सामन्तों और नायिकाओं का महमदशाह से संग्राम —1834-2072 423-474

42. देवलदे द्वारा बादशाह को बंदी बनाना और मुक्त करना, कसामोड, रतिसुंदरी आदि का शौर्य प्रदर्शन—2073-2111 474-482